जैन लक्षणावली भाग-३ (०१६०२३)

सम्पादक – बालचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय
सम्पादकीय
Foreword
प्रस्तावना
कपित्थदोष ---------- १
पर्व पर्वांग ---------- १
कांक्षा व काडक्षा ---------- १
गण व गच्छ---------- २
ग्रन्थि---------- २
छेद ----------३
छेदोपस्यापक ---------- ४
तदभवमरण ---------- ५
त्रस ---------- ५
दर्शन ---------- ६
दिव्यध्वनि ----------८
धर्म ---------- ९
नय ---------- ११
नाग्न्यपरीषहजय ---------- १४
निगोद जीव ---------- १४
निर्ग्रन्थ ---------- १५
निर्विचिकित्स ---------- १६
परिभोग ----------१८
पादपोपगमन ---------- १९
पुलाक ---------- २०
प्रवचनवत्सलता ---------- २०
बकुश ---------- २०
ब्रह्मचर्याणुव्रत ----------२१
भोगोपभोगपरिमाण ---------- २२
यथाप्रवृत्तकरण ---------- २२
याचनापरीषहजय ---------- २३
रसत्याग रसपरित्याग ---------- २४
वलन्मरण वलाकामरण वलायमरण ---------- २५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहायोगति नामकर्म -- २५
वृत्तिपरिसंख्यानतप-- २५
व्यवहारनय -- २५
श्रमण--- २६
सत्य --- २७
असत्य -- २७
समभिरुढनय -- २८
सम्यकत्व --- ३०
संग्रहनय --- ३३
संसारपरीत --- ३५
सामायिक --- ३६
समायिक प्रतिमा -- ३९
सूत्र -- ४०
सूत्ररुचि -- ४१
सोपक्रमायु -- ४१
स्तनदोष -- ४२
स्त्रीवेद --- ४२
स्थापनाकर्म -- ४३
स्थावर -- ४३
स्थिरनामकर्म --- ४४
ह्रस्व -- ४४
प्रस्तावनागत विशिष्ट लक्ष्य शब्दों की अनुक्रमणिका --- ४५
शुद्धिपत्रक -- ४६
जैन लक्षणावली जैन पारिभाषिक शब्द-कोष --- ७२९
प --- ७२९
फ --- ८०१
ब --- ८०२
भ --- ८३०
म --- ८७३
य --- ९४१
र --- ९५२
ल --- ९६४
व --- ९७७
श --- १०४७
स --- १०७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह --१२११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org